GLOBAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES ISSN: - 2348-0459
www.gjms.co.in
Volume-6, Issue-5, April 017 Impact Factor: 2.389

महिला स्वरोजगार :– ''नवीन आयाम एवं अवसर''

(छत्तीसगढ़ राज्य के संदर्भ में)

श्रीमती पद्मा सोमनाथे
शोधार्थी पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. सहा. प्राध्यापक गुरूकुल महिला महाविद्यालय

डॉ. राजेश अग्रवाल
शोध निर्देशक विभागाध्यक्ष गुरूकुल महिला महाविद्यालय

सारांश

''महिलाओ में असीम शक्ति मौजूद होती है, उनके अपार क्षमता, सृजनशीलता एवं आत्मविश्वास जैसे गुण उन्हे प्रत्येक ऐसे क्षेत्र में भी सफल बना रहे है, जिनमें अब तक वर्चस्व पुरूष वर्ग का रहा। आधुनिक परिपेक्ष्य में तकनीकी आधारित उद्यमो ने जहॉ व्यवसाय के तरीको में परिर्वतन किया वहीं महिला स्वरोजगार के क्षेत्र मे भी अपार संभावनाओं ने प्रवेश किया जैसे कृषि मे उत्पाद की नवीन तकनीक जैविक कृषि, सिलाई में फैशन डिजाइनिंग पशुपालन में डेयरी उद्योग, रेशम उद्योग,E Business में On-line Shopping.नवाचार के उक्त प्रयोगो द्वारा महिलायें प्राचीन उद्यम में भी परंपरागत उत्पादों को नवीनता प्रदान कर अपने उद्यम की सफलता दर्शित कर रही है। स्वयं शासन एवं कई निजी संस्थायें प्रशिक्षण, वित आदि सुविधाये भी प्रदान करते हुये अनेक योजनाओं का संचालन इस दिशा में कर रही है जो महिलाओं के लिये स्वरोजगार के नवीन आयाम एवं अवसरों की दिशा में मील का पत्थर साबित हो रहा है।''

शब्दकोश: सफलता दर्शित, फैशन डिजाइनिंग

प्रस्तावना

स्वरोजगार राष्ट्र के नियोजित एवं चहुंमुखी विकास का आधार है। स्वरोजगार ही उद्यम को समाज एवं वातावरण से जोड़कर आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं से मुक्त करती है। स्वरोजगार ही उपलब्ध संसाधनों को नवीन एवं उत्पादक रूप में संयोजित करती है।

वतमान में महिलायें भी स्वरोजगार के क्षेत्र में स्वरूचि, स्थायित्व, आर्थिक स्वतंत्रता की विचारधारा पर आधारित होकर उद्यमिता की नवीन परिभाषा लिख रही है। आज सभी विकासशील देशों में महिलायें तकनीकी अनुभव, प्रबंधकीय क्षमता, व्यवहार कु ालता लिये अपनी नैसर्गिक उद्यमीय प्रकृति के माध्यम से स्वरोजगार विकास की दौड़ में मील का पत्थर साबित हो रही है।

आज ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जो महिलाओं के लिये अछुता हो यदि वो चाहें तो अनेक क्षेत्रों में आज भी अपार संभावनायें है जिनमें वे अपनी ऊर्जा, क्रिया ीलता एवं अपनी नवीन कल्पनाओं का अभिनव प्रयोग कर सफलता के नवीन आयाम रच रही है।

निम्न क्षेत्रो में नवीन आयाम एवं अवसर महिलाओं के लिये उपलब्ध है जिनमें स्वरोजगार संचालित कर आर्थिक रूप से मजबूत बन सकती है :–

रेशम उद्योग के क्षेत्र में :–पहाड़ी क्षेत्र की महिलाओं हेतु कृषि का विकल्प ना होने एवं आधारभूत सुविधाओं के अभावों के कारण रेशम बीजोत्पादन, कीटपालन, धागाकरण स्वरोजगार का एक सशक्त साधन है। भारत के 50,000 गॉवो में 60,00,000 से भी अधिक लोग जम्मूक मीर, कर्नाटक, राजस्थान, तमिलनाडू, पं. बंगाल, आंध्रप्रदेश छ.ग. इस क्षेत्र में उद्यम स्थापित कर रहे है।

रेशम उद्योग, के अंर्तगत महिलाओं के लिये संबंधित अन्य उद्यम जैसे –रेशम साड़ी निर्माण, रेशम गलीचे निर्माण, रेशम बीजोत्पाद, रेशम धागााकरण, कीटपालन आदि में भी संभावनायें हैं।

छ.ग. प्रदेश के विभिन्न जिलों म 768 रीलिंग एवं 231 स्पीनिंग मशीन संचालित है एवं शासकीय योजनार्तगत संचालित 52 महिला स्वसहायता समूहो में 1058 महिलाये कार्यरत् है।

विगत वर्षों में से रॉ सिल्क उत्पादन का विवरण (छ.ग.)

क्रं.	विवरण	इकाई	2007–08	08–09	09–10	10–11	11–12	12–13	13–14	14–15
1	टसर रॉ सिल्क एवं धागाकरण	कि.ग्रा.	126298	146265	160534	167919	298608	387183	309835	312506

(स्त्रोत – 2014–15 अर्थिक सर्वेक्षण)

उक्त आंकड़े से स्पष्ट है कि रेशम उद्योग के क्षेत्र में महिलाये छ.ग. में सफल हो रही है।

- **टेक्सटाइल उद्योग के क्षेत्र में** :– कृषि के बाद सबसे अधिक रोजगार प्रदाता क्षेत्र जो औद्योगिक उत्पादन रोजगार के अवसर एवं विदेशी मुद्रा अर्जन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। टेक्सटाइल उद्योग से जुड़कर फैशन डिजाइनिंग, टेक्सटाइल डिजाइनिंग ड्रेस डिजाइनिंग में अपनी कल्पना शीलता का प्रयोग कर आधुनिकता के इस युग में असीम संभावनाओं का सृजन कर सकती है। ये उद्यम ना केवल स्वयं वरन् अन्य को भी रोजगार देने में सक्षम है। E-Commeree द्वारा On-line Shopping Production center and export house खालकर भी इस क्षेत्र में उज्जवल भविष्य की अनेक राहें हैं। कई महिलाओं नें जैसे रितु कुमार, भैरवो जयकिशन, लीना टिपनिस आदि इस क्षेत्र में प्रसिद्ध हो चुकी है।
- **कृषि के क्षेत्र में** :– महिलायें प्राचोन काल स ही परंपरागत उद्यम के रूप में कृषि संबधी क्रियाओं में संलग्न रही तत्पश्चात नयी राष्ट्रीय कृषि, नीति 2000 के परिवर्तन, NABARD शासन एवं गैर शासकीय संगठनों के प्रयास महिलाओं का इस क्षेत्र में नवीन दिशायें प्रदान कर रही है, उन्नत कृषि के जरिये फल सब्जिया, नर्सरी पौधे, मशरूम कृषि, वानिकी आदि नवीन मशीनों के द्वारा वैज्ञानिक कृषि से कम लागत में अधिक आय की मिसाल कायम कर रही है। प्रौद्योगिकी आधारित इस युग ने कृषि जैसे अति परंपरागत उद्यम को भी संभावनाओं से युक्त बना दिया है।वर्तमान में हमारे देश में 503 कृषि विज्ञान केन्द्र कार्यरत् है। जो उन्नत कृषि तकनीक संबंधी प्रशिक्षण प्रदान करती है उसके अतिरिक्त कई स्व सहायता समूह भी महिलाओं को वैज्ञानिक कृषि, खाद्य परिरक्षण संबंधी प्रशिक्षण देने की दिशा में कार्यरत् है, महिलाये इन सबकी सहायता से इस क्षेत्र में स्वरोजगार का विकल्प चुन सकती है।
- **लघु एवं कुटीर उद्यम के क्षेत्र में** :– कृषि के पश्चात् दूसरा महत्वपूर्ण क्षेत्र जो महिलाओं के लिये स्वरोजगार की दृष्टि से उपयुक्त है वह लघु एवं कुटीर उद्योग है। लघु उधम में महिलाओं की त्रिस्तरीय भूमिका है :– स्वामी के रूप में, प्रबंधक के रूप में एवं कर्मचारी के रूप में लघु उद्यम संबंधी आंकड़े नीचे प्रस्तुत है :–

क्रमांक	लघु उद्यम संबंधी विवरण	भारत	छ.ग.
1.	कुल लघु उद्यम की संख्या (महिलाओं द्वारा संचालित)	995141	11766
2.	महिला उद्यमों की संख्या	1063721	10034
3.	महिला कर्मचारियो की संख्या → पंजीकृत SSI क्षेत्र में → अपंजीकृत SSI क्षेत्र में	 974713 2342783	 10177 52476
4.	कुल रोजगार में महिला रोजगार का प्रति ात	13.31%	11.78%

(स्रोत :–dcmsme.govt.in)

लघु उद्यम के अन्य क्षेत्रों में महिलाओं के लिय असीम संभावनाय है जैसे – रसायन, चमड़ा, हस्तशिल्प, हाथकरधा, कागज, मोम उद्योग आदि ।

वर्तमान में उद्यमिता विकास केन्द्र, जिला उद्योग,NABARD आदि लघु उद्यमों से महिलाओं को जोड़ने हेतु कार्यरत् है। ये महिलाओं को उद्यम स्थापना संबंधी प्रक्रियाओ में सहायता प्रदान करते है।

- **वनोपज के क्षेत्र में** :– वनोपज संबंधी उत्पादो के विपणन के क्षेत्र में स्वरोजगार की अनेक संभावनाये है, बस्तर जैसे वनोच्छादित क्षेत्रो में वनो की लकड़िया, पत्ते दवाइयों, गोंद, तेंदू प्रसंस्करण, मिठाई निर्माण यहां तक सीताफल, जामून से आइसक्रीम, फूल व बीजों से अचार आदि क निर्माण जैसे विविध विकल्प कृषि वैज्ञानिको ने खोल कर रख दिये है। जो ग्रामीण क्षेत्र की वनवासी महिलाओं के लिये आर्थिक मजबूती व आधार भी है।

खनन के क्षेत्र में :–खनिज पदार्थों की उपलब्धता वाले क्षेत्रो में पत्थर, ईट का गारा, चुना, कोयला आदि खनिज पदार्थों द्वारा खनन के क्षेत्र में भी विपणन के अनेक विकल्प है, छ.ग. के राजीम बासीन क्षेत्र में अधिकांश महिलायें इस क्षेत्र में कार्यरत है। वर्तमान में शासन अनेक योजनाओं का संचालन कर रही है जो निश्चित तौर पर इन क्षेत्रों में महिलाओं को स्वरोजगार स्थापना में सहायक हो रही है।

- **बाँस कुटीर उद्योग के क्षेत्र में** :– वन सपदा युक्त क्षेत्रो में बाँस उत्पादन बाँस शिल्प व उनमें निर्मित कलाकृतियों, सजावटी सामग्री निर्माण एवं विपणन, ग्रामीण महिलाओं के लिये अपनी सृजन ीलता का उपयोग कर स्वरोजगार स्थापना का अच्छा माध्यम है।

शासन ने 2006–07 से बास मिशन कार्यक्रम अंर्तगत बॉस प्रसंस्करण केन्द्रो की स्थापना की जिनमें महिला उद्यमियों को प्रशिक्षण सुविधा में 30% आरक्षण व्यवस्था भी की गई है।

इसके अतिरिक्त महिलाओं द्वारा निमित उत्पादों के विपणन हेतु मेले प्रदशर्नियों की व्यवस्था एवं अनेक महिला हितार्थ योजनाओं का क्रियान्वयन भी किया है।

जो महिलाओं को इस क्षेत्र में उद्यम स्थापना हेतु प्रेरित करते हैं।

- **पर्यटन के क्षेत्र में** :– हमारे देश की कला, संस्कृति, परंपराओं कीख्याति राष्ट्रीय एवं अंर्तराष्ट्रीय स्तर तक है। प्रति वर्ष हजारो पर्यटक भ्रमण पर आते भी है।पर्यटन स्थल पर मेले, हाट बाजार, होटल व्यवस्था, मनोरंजन कलाकृतिया से संबंधित उत्पादो का विपणन जैसी युक्तियाँ इस क्षेत्र में भी आर्थिक स्वावलंबन की राहे महिलाओं के लिये खोलती है। शासन भी वर्तमान में पर्यटन के क्षेत्रों में आधारभूत सुविधाओं का विकास कर रही है एवं होटल, ट्रेव्हल ऐजेन्सी, मनोरंजन, हस्तशिल्प एवं विपणन संबंधी हुनर रोजगार कार्यक्रम द्वारा अनेक उद्यमियों को प्रशिक्षण भी प्रदान कर रही है ताकि पर्यटन उद्यम के क्षेत्र में स्वरोजगार के नवोन आयामों की रचना हो सके उर्जावान महिला उद्यमी इस क्षेत्र में अभिनव पयोग कर अनेक संभावनायें ढूँढ सकती है।
- **तकनीको उद्यम के क्षेत्र में** :– महिलायें शासकीय एवं निजी महिला आई टी आई व राष्ट्रीय स्तर पर अनेक प्रशिक्षण संस्थाओं से प्रशिक्षण ग्रहण कर तकनीकी ज्ञान आधारित उद्यम स्थापित कर सकती हे जैसे स्क्रीन प्रिंटिग, रेडियो, टी.वी मरम्मत, स्टेप्लाइजर, हाऊस वायरिंग,CFL निर्माण, कम्प्यूटर प्रशिक्षण आदि। आवश्यकता है केवल जागरूक होकर शासकीय या निजी स्तर पर जहॉ प्रशिक्षण सुविधायें उपलब्ध हो रही हो वहाँ इन सुविधाओं से स्वयं को लाभान्वित करें।
- **ई–कामर्स के क्षेत्र में** :–Business to customer की सहायता से महिलायें अल्प समय में घर बैठे ऐसे कार्य कर सकती है जिनमें निर्धारित स्थान या दुकान की आवश्यकता नहीं है। कम्प्यूटर ज्ञान आधारित ई–कामर्स में व्यवसाय की अपार संभावनाये है क्योकि On-line shopping के माध्यम से साड़ी, ज्वेलरी, सौदर्य प्रसाधन, घरेलू उपयोग की वस्तुये, इलेक्ट्रानिक्स सामान, यहॉ तक की टिफिन सेवा, घरेलू मसाले, फूड सर्विस आदि कार्य भी घर बैठे कर सकती है। ग्राहको के साथ व्यापार का एक प्रत्यक्ष संबंध स्थापित करने का जरिया ई–कार्मस है। इसी के तर्ज पर इथोपिया में महिलाओ ने इंटरनेट गिफ्ट शॉप स्थापित किये है।
- **स्व सहायता समुह के रूप में गठित होकर** :– स्व. सहायता समूह विविध प्रकार के लघु उद्योग, शासकीय योजनांर्तगत रेडी टू इट, मध्यान भोजन निर्माण, गणवेश सिलाई आदि कार्य समूह के रूप में करके नये आयाम स्थापित कर रही है। इसके अतिरिक्त अलग–अलग जिलो में शासन की सहायता से भी वित्त, प्रशिक्षण जैसी सुविधायें प्राप्त कर अनेंको स्व. सहायता समूह की स्थापना हो रही है।

छ.ग. में राजनांदगांव जिले में फूलबासन नें 72000 से भी अधिक स्व सहायता समूह स्थापित कर महिलाओं को उसमें जोड़कर एक मिसाल कायम की है। वहीं बालोद जिले में धनलक्ष्मी स्वसहायता समुह 2010 से लगातार महिलाओं के विकास में कार्यरत् है।

समूह आधारित भावना अंर्तगत कार्य कर अनेको संभावनाओं और विकल्पो के मध्य इस दिशा में चलकर महिलाये सफलता के नवीन अवसर चुन सकती है।

- **निष्कर्ष** :– निश्चित रूप से महिलायें राज्य का संभाव्य भविष्य है, और वे चाहें तो स्वयं अपने साहस, नवीन क्रिया ीलता, सृजन शक्ति जैसे गुणों का सही उपयोग करें तो आत्मनिर्भरता की दिशा में अनेको विकल्प मौजूद है।

जहॉ गामीण क्षेत्र की महिलाये कृशि, पशुपालन, डेयरी, परंपरागत उद्यमों में संलग्न है, वहीं शहरी क्षेत्रों में सेवाप्रदाता फैशनडिजाइनिंग, ई. कॉमर्स, पर्यटन के अवसर है, वहीं प्राकृतिक संसाधन युक्त क्षेत्रों में वनोपज, रेशम उद्योग, बॉस उद्योग के विकल्प भी है। महिला स्वरोजगार विकास हेतु स्वयं शासन एवं निजी संस्थायें मिलकर अनेक योजनाये संचालित कर रही है, भविष्य में और नवीन योजनायें शासन द्वारा संभावित है, आव यकता है महिलायें भी स्वयं जागरूक होकर अपने अंदर छिपी योग्यता को एवं शासन से प्राप्त सहायता को उचित रूप से समन्वित कर उपलब्ध पूंजी योग्यता, स्थानीय मांग के आधार पर उद्यम संचालित करें।

- **संदर्भ ग्रंथ** :–

(1) *डॉ. तिवारी अंशुजा –''महिला उद्यमिता'' ओमेगा पब्लिकेशन नई दिल्ली 2008*
(2) गुप्ता यू.सी.एवं गुप्ता मीनाक्षी –''महिलाये एवं उद्यमिता विकास कार्यक्रम'' अर्जुन पब्लिकेशन हाऊस दरियागंज दिल्ली 2014
(3) सुधा, जी.एस. ''व्यावसायिक उद्यमिता का विकास'' रमेश बुक डिपो जयपुर 2009
(4) माथुर डॉ. एस. पी. ''भारत में उद्यमिता विकास'' हिमालया पब्लिशिंग हाऊस मुबंई 2010.
(5) शर्मा विनय कुमार ''उद्यमीय गति शीलता'' क्लासिकल पब्लिशिंग कं. नई दिल्ली 2008
(6) गुप्ता डॉ. यू.सी. ''उद्यमिता विकास''कैलाश पुस्तक सदन भोपाल वर्ष 2008
(7) हरकुट ओ. पी. वैश्णव जी.पी. ''उद्यमिता विकास'' हैंडबुक साईटीफिक पब्लिशर्स जोधपुर वर्श 2006.

पत्र–पत्रिकायें एवं जर्नल्स

❖ *आर्थिक सर्वेक्षण 2014–15*

❖ *वार्शिक प्रतिवेदन (छत्तीसगढ़ महिला कोश) 2009–10*
❖ *कुरूक्षेत्र नई दिल्ली जुलाई 2013*
❖ *कुरूक्षेत्र नई दिल्ली जून 2010*
❖ *कुरूक्षेत्र नई दिल्ली मार्च 2008*

****